१७३. खोलो मनके द्वार

दोहा : *यह शुभदिनपर दिया मेहेरने दर्शन साक्षात्कार ।*
इसी शुभघडी प्रेमी गरजे मेहेर जयजयकार ।
मन मंदिरको साफ करो, करो स्नेह स्वीकार ।
सही संक्रमण तब बने मिले मेहेरका प्यार ॥
मीठी बोलो देवो लेवो स्नेहप्रेम उपहार ।
यही महासंदेश दिलाने आया है अवतार ॥

खोलो मनके द्वार । गरजके बोलो मेहेर जयकार ॥धृ.॥

भ्रमके बादल आये घिरघिर । मानव भूल गया है ईश्वर ।
प्रेमकी दो ललकार ॥१॥
ऐसी होगी टेक हमारी । जाग उठेगी दुनिया सारी
जागे सब संसार ॥२॥
प्रेमविना नही भेद मिटेगा । त्याग बिना नही सुख आवेगा
सोचो बारंबार ॥३॥

Scanned by CamScanner

जो तुम जानो कह दो सबको । ये मेहेरकी आन तुम्ही को
भले न हो स्वीकार ॥४॥
जानकेभी खामोश रहोगे । मधुसूदन बस पछतावोगे
आया है अवतार ॥५॥

Scanned by CamScanner